Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 1, Issue 1 - 2018

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन

किरन गुप्ता*

शिक्षा आजीवन चलने वाली सतत् प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से मानवीय व्यवहारों, उसके क्रिया–कलापों, उवकी जीवनशैली एवं चिन्तन में नवीनता लायी जाती है। शिक्षा बालक में निहित शक्तियों को विकसित करती है तथा उसे नये–नये क्षेत्रों से परिचित कराके उसके लिए सम्भावनाएँ उत्पन्न करती है। शिक्षा से व्यक्ति अपने व्यवहार का परिवर्तन करके समाज में अपना स्थान विशिष्ट बनाता है। शिक्षा के द्वारा बालक या व्यक्ति में अनुभवों का विकास होता है जो उसे धीरे–धीरे किसी कार्य के लिए परिपक्व बना देता है। किसी ज्ञान को सीखने में तथा सीखे गये ज्ञान के स्थायीकरण में परिपक्वता की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाने में किसी भी समाज की शिक्षा के समस्त उद्देश्य एवं कार्य समाहित है। मनुष्य को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए शिक्षा में उदान्त मानवीय मूल्यों को स्थापित किया जाना चाहिए। शिक्षा के आलोक में ही मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियाँ प्रकाशित होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) का निर्माण समाज की संरचना के लिए लिए किया गया। एस0पी0 रूहेला ने लिखा है– *"भारतीय समाज में अभी तक अनिवार्य नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था न हो पाने के कारण वांछित सामाजिक परिवर्तन नहीं हो पा रहा है।"*[1] नीति का मानना था कि राष्ट्रीय विकास व एकता के लिए चरित्रवान् वैज्ञानिक दृष्टि वाले, राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव वाले, भारतीय संस्कृति, नागरिकता, मूल्य व आदर्श वाले नवयुवक–नवयुवतियों की आवश्यकता है और यह काम शिक्षा ही बखूबी निभा सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) का निर्माण शिक्षा को एक नयी दिशा देने के उद्देश्य से किया गया। इसका उद्देश्य "अब तक के संचित साधनों के प्रयोग से समाज के हर वर्ग को लाभ पहुँचाने की कोशिश की जाए और शिक्षा उस लक्ष्य तक पहुँचने का प्रमुख साधन है।" राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) का उद्देश्य बिना भेदभाव के, एक निश्चित स्तर तक 'सबके लिए शिक्षा' से की गयी। देश में सामाजिक–आर्थिक स्तर से निम्न लोगों को शिक्षित करने के लिए समय–समय पर सरकार, आयोग एवं समितियों द्वारा प्रयास किये गये जिसमें नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, मीड–डे–मिल योजना, सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, शिक्षा का अधिकार 2010, समावेशी शिक्षा आदि प्राथमिक स्तर एवं पूर्व माध्यमिक स्तर पर शुरू किया गया जिससे माध्यमिक शिक्षा तक पहुँचने में सामाजिक–आर्थिक स्तर कारक के रूप में न पनप पायें वर्तमान परिदृश्य में शैक्षिक आयोजनों की सार्थकता वहीं तक है जिस सीमा तक वह वह मानवीय, सामाजिक आवश्यकताओं एवं अपेक्षा की पूर्ति कर सकें।

[1] सिन्हा, राजेश कुमार (2004). भारतीय समाज में शिक्षा, दिल्ली : दिशा प्रकाशन, पृ0 40

*शोधछात्रा (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती, मानित विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ0प्र0)
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

वर्तमान दौर में व्यक्ति की आकांक्षा स्तर में अत्यधिक वृद्धि हुई है तथा इनकी पूर्ति न होने पर वह कुण्ठा एवं भग्नाशा से ग्रस्त हो जाता है।

माध्यमिक स्तर पर छात्र किशोरावस्था में होता है। इस अवस्था में बालक में संवेगों की प्रबलता, विरोधी, मनोदशाएँ, शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन, विचारों में अस्थिरता, तर्क, चिन्तन एवं कल्पना शक्ति में तीव्रता आदि के साथ–साथ वैयक्तिक स्थिति अस्पष्ट होती है और उसे स्वयं ही अपने द्वारा की जाने वाली सामाजिक भूमिका के बारें में संभ्रान्ति होती है। जिसके कारण उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। किशोरों के आवेगों एवं संवेगों में इतनी परिवर्तनशीलता होती है कि वह प्रायः विरोधी व्यवहार करता है जिससे उसे समझना कठिन हो जाता है। किसी व्यक्ति की संवेगात्मक स्थिति का असर उसकी अधिगम क्षमता पर पड़ता है इसमें कोई संदेह नहीं है कि बच्चों के संवेग उसकी विद्यालयी जीवन के साथ–साथ उनके शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा, बुद्धि आदि पर प्रभाव डालता है लेकिन जैसे–जैसे वह परिपक्वता की ओर बढ़ता है उसके अनुभवों एवं कार्य क्षेत्र का विस्तार होने के साथ–साथ उनमें सीखने की क्षमता, बुद्धि विकास, बढ़ता जाता है। सामाजिक–आर्थिक स्तर एक ऐसा कारक है जिसका प्रभाव विद्यार्थियों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। सामाजिक–आर्थिक निम्न होने के कारण शिक्षा बाधित होने के साथ–साथ संवेगात्मक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिवक्वता पर भी प्रभाव पड़ता है। जमादार, चन्द्रकान्त एवं ए. सिन्धु (2015) ने अध्ययन में इंगित किया कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। कौर, नवदीप (2015) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक परिवक्वता पर सार्थक प्रभाव है। परिवार का प्रभाव बच्चों के संवेगात्मक बुद्धि एवं परिपक्वता पर पड़ना स्वाभाविक है। बालक घर में खान–पान, रहन–सहन, वेषभूषा आदि परिवार से ही सीखता है एवं परिवार के साथ अपने अधिक से अधिक समय व्यतीत करता है। जैसा पूर्व अध्ययन से ज्ञात होता है कुमार, अशोक एवं कंशल, हरिश (2018) ने अध्ययन में इंगित कि कि माता–पिता के आपसी सम्बन्ध का प्रभाव भी किशोरावस्था के बालक–बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर पड़ता है। पारिवारिक वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के संवेगात्मक बुद्धि में परिवर्तन कर सकता है। इस प्रकार का परिवर्तन किशोर विचित्र अभिव्यक्तियों जैसे–प्रेम, स्नेह, सहानुभूति आदि के माध्यम से सकारात्मक रूप में प्रदर्शित करता है। किशोर की संवेगात्मक अभिव्यक्ति उसकी शारीरिक अभिवृद्धि, ज्ञान, अनुभव एवं रूचियों पर आधारित होती है। इस प्रकार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति/किशोर की सामाजिक दृष्टि से वांछनीय क्रियाओं तथा अवांछनीय प्रक्रियाओं की ओर अग्रसित करता है और जब व्यक्ति संवेगों का प्रबन्धन या नियंत्रण करने में सक्षम हो जाता है तो वह उसकी संवेगात्मक बुद्धि संतुलित मानी जाती है।

अतः अध्ययनकर्त्री द्वारा इसी परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है कि क्या संवेगात्मक परिपवक्वता पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का सम्बन्ध होता है कि नहीं?

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपवक्ता के मध्य सम्बन्ध का एक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपवक्ता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता की विमाओं के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता की विमाओं के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि

शोध समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्त्री ने वर्णनात्मक शोध की सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या

जनसंख्या के रूप में इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में इलाहाबाद जनपद के 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन कर उसमें अध्ययनरत् 150 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है।

उपकरण

विद्यार्थियों संवेगात्मक परिपक्वता के मापन के लिये डॉ0 यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता स्केल (Emotional Maturity Scale) तथा सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित 'सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी' का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीक

प्रदत्तों के संकलन द्वारा परिगणन के पश्चात् निर्मित की गयी शून्य–परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध तकनीक का उपयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

विद्यार्थी	न्यादर्श का आकार	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	df	सार्थकता स्तर
सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता	150	0.3568	148	सार्थक

तालिका 1 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.3568 है जो 148 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.159 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

तालिका संख्या–2.माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववत्ता की विमाओं के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

विद्यार्थी	न्यादर्श का आकार	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	df	सार्थकता स्तर
सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक अस्थिरता	150	0.2898	148	सार्थक
सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं सांवेगिक दमन	150	0.2204	148	सार्थक
सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं सामाजिक कुसमायोजन	150	0.1487	148	असार्थक
सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं व्यक्तित्व विघटन	150	0.2593	148	सार्थक

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववक्ता की विमा संवेगात्मक अस्थिरता, सांवेगिक दमन तथा व्यक्तित्व विघटन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.2898, 0.2204, तथा 0.2593 है जो 148 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.159 से अधिक है। यह मान 0.05 स्तर पर सार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववक्ता की विमा संवेगात्मक अस्थिरता, सांवेगिक दमन, सामाजिक कुसमायोजन तथा व्यक्तित्व विघटन के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

जबकि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववक्ता की विमा सामाजिक कुसमायोजन के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.1487 है जो 148 स्वतंत्र्यांश के लिए 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मान 0.159 से कम है। यह मान 0.05 स्तर पर असार्थक है व शून्य परिकल्पना अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववक्ता की विमा सामाजिक कुसमायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववक्ता के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववक्ता की विमा संवेगात्मक अस्थिरता, सांवेगिक दमन, सामाजिक कुसमायोजन तथा व्यक्तित्व विघटन के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं संवेगात्मक परिपववक्ता की विमा सामाजिक कुसमायोजन के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके संवेगात्मक परिपक्वता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होने पर

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.

संवेगात्मक परिपक्वता उच्च एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर निम्न होने के कारण उनके संवेगात्मक परिपक्वता में कमी पायी गयी। इसका कारण यह हो सकता है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर से उच्च विद्यार्थियों द्वारा अपने माता–पिता के मान–सम्मान एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण उनकी संवेगात्मक परिपक्वता उच्च स्तर की होगी वहीं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को परिवार में स्नेह, प्यार एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति न हो पाना तथा सामाजिक क्षेत्र में उन्हें महत्त्व न मिलना उनकी संवेगात्मक परिपक्वता को प्रभावित करता है। समान शोध शर्मा, रेनूबाला (2014) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि भारतीय परिवेश में बालिकाओं को बालकों की अपेक्षा, जिम्मेदारी पूर्ण काम नहीं दिये जाते हैं। बालिका होने के नाते उन पर निर्णय लेने की भूमिका की भी कमी होती है। घर से बाहर रहने की स्वतंत्रता भी बालकों की तुलना में, उन्हें कम प्राप्त होती है। संभवतः ऐसे अनेक कारकों के प्रभाव से उनमें परिपक्वता कम रह जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. जमादार, चन्द्रकान्त एवं ए. सिन्धु (2015). द इम्पैक्ट ऑफ सोशियो–इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ इमोनशनल इन्टेलिजेन्स एण्ड क्रिएटिव एमंग ट्राइबल एडोलसेन्ट स्टूडेन्ट्स, द *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी*, वॉल्यूम–3, इश्यू–1, पृ0 112–125.

[2]. कौर, नवदीप (2015). स्टडी ऑफ इमोशनल मैचुरिटी ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर सोशियो–इकोनॉमिक स्टेटस, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेण्ट एण्ड सोशल साइंस*, वॉल्यूम–03, इश्यू–02, पृ0 870–879.

[3]. त्यागी, कृष्णा (2012). स्नातक स्तर के खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों की सामाजिक एवं संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन, एशियन *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी*, वॉल्यूम–2(2), पृ0 228–231.

[4]. शर्मा, रेनूबाला (2014). बाल्यावस्था में संवेग परिपक्वता एवं सामाजिक समायोजन के परस्पर सम्बन्ध का अध्ययन (जिला सागर म0प्र0 के संदर्भ में), शोध–प्रबन्ध, गृह विज्ञान, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म0प्र0)।

[5]. लेंका, झरना मंजारी एवं अन्य (2015). पब्लिक स्कूल तथा विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिवक्ता का तुलनात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेन्ट साइंसेस एण्ड टेक्नोलॉजी*, वॉल्यूम–6, इश्यू–2, पृ0 257–265.

[6]. कुमार, अशोक एवं कंशल, हरिश (2018). किशोरावस्था के बालक–बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि पर माता–पिता के सम्बन्धों का प्रभाव का अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट*, वॉल्यूम–2, इश्यू–4, पृ0 509–511.

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved.